विभिन्न कौशलों एवं शिक्षण कौशलों की युवा वर्ग के सन्दर्भ में उपादेयता

कंचन शुक्ला
शोधछात्रा
(शिक्षाशास्त्र विभाग)
नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

Received Jan. 10, 2018 Accepted Feb. 19, 2018

''आज युवाओं में कौशल विकास करना हमारी सरकार का एक महत्वपूर्ण प्रयास बन गया है। इसलिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने ''स्किल इण्डिया'' स्किल डेवलपमेन्ट इन इण्डिया इत्यादि अभियान एवं योजनाओं का विशेष महत्व दिया है।

कौशल का अभिप्राय–

किसी भी प्रक्रिया को संचालित करने से पहले उसमें प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण करना प्रमुख बिन्दु होता है। परन्तु कुछ शब्द ऐसे होते हें जिनका, प्रयोग, क्षेत्र, तथा परिस्थिति के अनुसार अभिप्राय भी बदलते रहते हैं इसलिए निकटतम अभिप्राय से ही संतुष्ट होना पड़ता है।

कौशल का शाब्दिक अभिप्राय– किसी कार्य को दक्षता एवं विशेषता से पूर्ण करना।

विक्कीपीडिया के अनुसार –''कौशल वह योग्यता है जो किसी कार्य को पहले से पूर्व निर्धारित परिणाम, निश्चित समय, और ऊर्जा के अनुसार पूर्ण करने में सक्षम बनाये।

सामान्य मतानुसार कौशल वह योग्यता गुण या विशेषता है जो सीमित साधनों, स्रोतो, विपरीत परिस्थितियों और असंभव महसूस होने वाले कार्यों को भी प्रभावशाली ढंग से कल्याणकारी तथा उपयोगिता की दृष्टि से नवीन ढंग से पूर्ण करने में सक्षम बनाये।

कौशल जन्मजात नहीं होता बल्कि हासिल किया जाता है। हासिल करने के स्रोत है, जीवन के अनुभव, शिक्षा, कार्य का अनुभव इत्यादि। संभव है कि कोई व्यक्ति किसी कारणवश विकलांग हो जाता है या फिर यह विकलांगता जन्म से ही हो। इसके बावजूद यदिउस व्यक्ति में कुछ कर गुजरने का जज्बा हो तो निश्चित तौर पर वह किसी कार्य के लिए कौशल हासिल कर लेगा। जबकि यह बात भी सही है कि सभी व्यक्ति में एक समान कौशल नहीं होते बल्कि अलग–अलग होते हैं। कोई कुशल वक्ता हो सकता है तो किसी की लिखावट अच्छी हो सकती है और इसलिए कौशल परीक्षणों का उद्देश्य होता है, कौशल को पहचान कर उसके अनुसार कैरियर को दिशा प्रदान करें।

कौशलों को संभवतः दो भागों में बाँटा जा सकता है– (1) सामान्य कौशल (2) विशिष्ट कौशल।

1. **सामान्य कौशल–**ऐसे कौशल जो सम्भवतः सभी प्रकार के कार्यों का पूर्ण करने में इनकी आवश्यकता रहती है। जैसे– समय प्रबंधन, टीमवर्क, कुशल नेतृत्व, आत्मप्रेरण, रूचि, इत्यादि।
2. **विशिष्ट कौशल–** ऐसे कौशल जो किसी कार्य या व्यवसाय की दृष्टि से ही उपयोगी हो। ये व्यक्ति के स्वकौशल होते है जिनको प्रेरित करने के लिए किसी विशेष परिस्थिति या विशेष उद्दीपन की आवश्यकता होती है। उदाहरणस्वरूप–सामाजिक कौशल, परस्पर सम्बन्ध कौशल सूचना एवं संचार कौशल, चरित्र, गुण, अभिवृत्ति, व्यवसायिक अभिरूचि, संवेदनावधि बुद्धिलब्धि इत्यादि।

कुछ महत्वपूर्ण कौशलों की विशेषताओं का संक्षिप्त प्रस्तुतीकरण–

यथार्थवादी (कर्ता) कौशल–

(प) निर्माण कौशल–यंत्रों का संग्रहण, संकलन एवं ढाँचा प्रदान करना।

(पप) कृषि कौशल–अनाज उत्पादन या पशुपालन

(पपप) डिजाइनिंग– उपस्कर मॉडल, पैटर्न बनाना।

(पअ) संचालन

(अ) निरीक्षण

(अप) रिपेयरिंग

(अपप) संवेदी

<u>अन्वेषक कौशल</u>

पण विश्लेषण

<u>कलात्मक कौशल</u>

पण बुद्धिगम्यता

पप	परीक्षण	पप	रचना करना
पपप	भविष्यवाणी	पपप	सृजन
पअ	समस्या समाधान	पअ	ड्राइंग
अ	पूछताछ या पड़ताल (साक्षात्कार)	अ	मनोरंजन
अप	अनुसंधान	अप	लेखन
अपप	चिंतन	अपप	निर्माता
अपपप	मूल्यांकन	अपपप	अभिव्यक्ति
पग	नैदानिक	पग	खोज

सामाजिक कौशल–

पण सलाह देनाः ज्ञान देना, निर्णयन में भागीदार होना।

पप संचारनः साक्षात्कार लेना, विचार एवं सूचनाओं का आदान–प्रदान

पपप सहयोग

पअ काउंसिलिंगः दिशा–निर्देशा देना या मार्गदर्शक की भूमिका निभाना

अ प्रोत्साहनः किसी के क्षमता विकास हेतु प्रेरणा देना

अप मध्यवर्ती बनाना– किसी व्यक्ति या समूह के विकास में सहायक होना

अपप योजना बनानाः सम्मेलन या बैठक या किसी सामाजिक समारोहों का आयोजन करना।

अपपप अध्यापनः कोचिंग, प्रशिक्षण कार्यशाला में अध्यापन

पग सेवा करनाः जरूरतमंदो की सेवा में तत्परता से हिस्सा लेना।

शिक्षण कौशल शिक्षण प्रक्रिया को सुचारू बनाने के लिए विभिन्न क्रियाओं का शकुशल प्रयोग है। वास्तव में शिक्षण कौशल, किसी कार्य तत्व व सिद्धान्त को अत्यन्त सरल तरीके से विभिन्न स्तरों एवं दिशाओं से उपयुक्त या अनुपयुक्त दोनों परिस्थितियों में निम्न से निम्न सुविधाओं एवं यन्त्रों में, इस प्रकार पूर्ण करना की उस कार्य तत्व या सिद्धान्त की जटिलता भी सामान्य प्रतीत हो। संभवतः यही कौशलपूर्ण कार्य का कौशल पूर्ण व्यक्तित्व का स्वरूप है।

शिक्षण का अर्थ– ज्ञान, भाव तथा कौशल प्रदान करना, शिक्षण एक अन्तःक्रियात्मक प्रक्रिया है जो मुख्य रूप से कक्षाकक्ष में होने वाली समस्त क्रियाओं के संगठन के रूप में मानी जाती है। **सारेन्सन एवं हुसैन** के अनुसार– शिक्षण के अन्तर्गत छः प्रकार की क्रियाएँ सम्मिलित की जाती है– सूचना प्रदान करना, सलाह देना, प्रेरित करना, परामर्श देना, न्याय करना, अनुशासन स्थापित करना। शिक्षण का केन्द्र बिन्दु छात्र है और शिक्षण का मूल्यांकन विद्यार्थी के अधिगम के आधार पर ही किया जाता है। सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक अनेक व्यवहारों का सम्पादन करता है जिन्हें सम्मिलित रूप में शिक्षण कौशल कहते हैं।

शिक्षण कौशल वे प्रत्यय है जो कि शिक्षण को सर्वाधिक प्रभावित करते हैं क्योंकि शिक्षण को एक विज्ञान भी माना जाता है और कला भी कला के रूप में यह अवधारणा प्रस्तुत की जाती है कि शिक्षक जन्मजात होते हैं एक प्रभावशाली शिक्षक वह माना जाता है जिसमें विशिष्ट कौशल पर्याप्त मात्रा में उपस्थित रहते हैं। **गेज** ने कहा है कि– ''शिक्षण कौशल एक विशेष अनुदेशन प्रक्रिया है जिसे शिक्षक अपनी कक्षा शिक्षण में प्रयोग करते हैं।''

शिक्षण में निहित प्रमुख कौशल –एनल एवं रायन के अनुसर ये संख्या में 14 है–

1. उद्दीपन भिन्नता
2. विन्यास प्रेरणा
3. समीपता
4. मौन एवं आदर्शक अन्तःप्रक्रिया
5. पुनर्बलन
6. प्रश्न पूछना
7. खोजपूर्ण प्रश्न
8. विकेन्द्रीयप्रश्न
9. छात्र व्यवहार के प्रति अनुक्रिया

10. छात्रों की सहभागिता को प्रोत्साहन

11. श्यामपट्ट प्रयोग

12. समीप्यता प्राप्ति

13. छात्र व्यवहार की पहचान

14. उच्चस्तरीय प्रश्न।

आस्ट्रेलिया एडवाइजरी कमेटी ऑन रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट इन एजुकेशन के आधार पर डा0 डी0के0सेठ द्वारा शिक्षण कौशलों को निम्न रूप में विभाजित किया गया है–

प्रेरणात्मक कौशल–

- छात्र व्यवहार को पुनर्बलन प्रदान करना।
- शिक्षण में भिन्नता प्रदान करना।
- प्रभावकारी प्रस्तावना विधि का प्रयोग
- छात्रों के विचारों एवं योगदान को स्वीकार करना।
- बच्चों की आवश्यकताओं को पहचानना एवं समाधान।

प्रस्तुतीकरण एवं संचार कौशल

- प्रश्न कौशल
- लघु वर्ग का व्यक्तिगत अनुदेशन के कौशल
- छात्र चिन्तन का विकास
- मूल्यांकन कौशल
- कक्षा कक्ष प्रबंधन एवं अनुशासन

वर्तमान समय वैश्विकता एवं तकनीकी का है इसलिए कौशल विकास एवं महत्वपूर्ण साधन है। जिससे परिश्रम का प्रभावित एवं गुणात्मक विकास होता है। साथ ही इससे उत्पादन क्षमता विकास भी उन्नत होता है। कौशल विकास निर्माण एक शक्तिशाली साधन है व्यक्ति एवं सामाजिक दशा को उन्नत बनाने का।

भारत चूँकि युवा वर्ग का देश है जिसमें प्रत्येक वर्ष 28 अरब युवा वर्ग की जनसंख्या जुड़ती रहती है। यहाँ की लगभग 50 प्रतिशत आबादी 25 वर्ष से नीचे की है और लगभग 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष के नीचे की है। इस आधार पर 2020 तक एक भारतीय की औसत आयु 29 वर्ष की आकलित की गयी है। जबकि यह औसत आयु चीन की 37 वर्ष है और जापान में 48 वर्ष है। इसलिए युवा वर्ग में कौशल विकास को महत्वपूर्ण बताते हुए पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने कोलकत्ता में सी0आई0आई0 के आयोजन में कहा– हम सदैव भारत के युवाओं की जनसंख्या सारणी की प्रशंसा का गुणगान करते हैं। परन्तु प्रश्न यह उठताहै कि हम इनका क्या करेंगे। यदि हम इन्हें कौशल नहीं प्रदान करेंगे तो हम इनकी उत्पादक क्षमता का कभी भी सदुपयोग नहीं कर पायेंगे।''

इसलिए अन्ततः यही निष्कर्ष निकलता है कि वर्तमान परिपेक्ष्य में कौशल विकास के प्रत्येक क्षेत्र की विशेषताओं को युवा वर्ग में व्यवहारिक तरीके से संचरित करने हेतु समुचित विकास करना चाहिए इसके लिए निर्मित विभिन्न योजनाओं को प्रशासन के विकेन्द्रीकरण स्तर से लागू करके अपने देश की युवा वर्ग की शक्ति एवं प्रतिभा का सदुपयोग करने का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। इस शोध पत्र की विशेषताओं को सामान्य युवावर्ग तक प्रसारित करना है।

सन्दर्भ ग्रन्

उथ सूची

1. ढउवल एस0ई0 (1984) भारत में अध्यापक शिक्षा का विश्लेषणात्मक अध्ययन, अमिताभ प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. डा0 सिंह त्रिभुवन (1978) शिक्षण एवं शिक्षण कौशल, भारत भारती प्रकाशन, हुसैनाबाद, जौनपुर।
3. श्रीवास्तव एच0एस0 (2006) शिक्षण का पाठ्यक्रम एवं पद्धति; शिप्रा प्रकाशन, विकास मार्ग, नई दिल्ली।
4. डा0 भट्टाचार्य जी0सी0 (2016–17) अध्यापक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, प्र0सृ0 193
5. गाँधी डी0 एण्ड पैलसेन एम0एन0 (1967) शिक्षण अभ्यास, अध्यापक शिक्षक वाल्यूम, 1–3 पृ0सं0 1–34